ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 288-291

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- Sept.-2021

प्रवासी कहानियों में वृद्ध विमर्श

डॉ0 गीता पांडे E-mail: aaryvart2013@gmail.com

Received- 21.07.2021, Revised- 26.07.2021, Accepted - 01.08.2021

सारांश : *साहित्य सामाजिक यथार्थ का प्रतिबिंब है। साहित्य सृजन सदैव जन समुदाय की भावनाओं को ध्यान में रखकर किया जाता है। प्रत्येक देश – काल के परिवर्तन के साथ–साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता जाता है। समाज के प्रत्येक वर्ग हर तबके के लोगों को साहित्य ने अपना विषय बनाया है। लेखक – लेखिकाओं ने अपने ज्ञान और अनुभवों के द्वारा उत्कृष्ट साहित्य का सृजन कर के जनसामान्य का उनके आसपास घटित हो रही घटनाओं से साक्षात्कार कराया है। विभिन्न विधाओं कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि में साहित्य सृजन होता रहता है। कहानी साहित्य की एक सशक्त विधा मानी जाती है। कहानी से हमें जीवन पथ पर चलने के लिए आदर्श एवं मूल्य मिलते हैं। वर्तमान में कहानी यथार्थ पर आधारित होती है। विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन एवं विषय क्षेत्र का दायरा बढ़ता गया है, और नई वैचारिकी की शुरुआत हुई है। इसी बदलते परिदृश्य और परिवेश के साथ–साथ साहित्य में एक दौर ऐसा भी आया, जो विमर्शों के नाम से जाना गया। हिंदी साहित्य में विमर्शों का उद्भव दलित विमर्श से हुआ, तत्पश्चात विवादों की बाढ़ सी आ गई जैसेय स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श, किसान विमर्श, जनजातीय विमर्श, किन्नर विमर्श और अब वृद्ध विमर्श। वर्तमान में वृद्ध विमर्श पर चर्चा जोरों से चल रही है। समाज का प्रत्येक वर्ग जो पीड़ित और शोषित है, उसे हाशिए से केंद्र में लाने का कार्य इन विमर्शों ने किया है और आजकल विरुद्ध विमर्श की गूंज अधिक सुनाई दे रही है। प्रवासी साहित्य भी इस विमर्श के प्रभाव से अछूता नहीं रहा है। प्रवासी साहित्यकारों की रचनाओं में पहले नारी मुक्ति और अब वृद्ध अवस्था की समस्याएं या पीड़ा अधिक देखने को मिल रही हैं। वृद्ध का शाब्दिक अर्थ होता है परिपक्व ।*

कुंजीभूत शब्द–साहित्य सामाजिक, साहित्य सृजन, जन समुदाय, विमर्श।

वृद्ध विमर्श का अर्थ वृद्धों की स्थितियों, परिस्थितियों का चिंतन करना और उनकी समस्याओं को समझ कर उनके लिए उचित समाधान करना है । वृद्ध अवस्था जीवन का एक सत्य है, यह एक प्राकृतिक घटना है,और इससे कोई नहीं बच सकता। वृद्ध अमूल्य धन है अर्थात यह तो सर्वविदित है कि वृद्धों के पास जीवन अनुभवों का कोष है। लेकिन इनकी अपनी समस्याएं, तनाव, अपेक्षाएं, द्वंद आदि भी हैं, जिसको यह किसी के साथ साझा करने को लालायित रहते हैं। बहुत सी ऐसी बातें हैं जिन्हें वृद्ध अपने जीवन के अंतिम दिनों में अपने बच्चों से साझा करके अपने बचे कुचे जीवन को शांति से काटना चाहते हैं लेकिन आज इस भागदौड़ भरे जीवन में बच्चों के पास इतना समय ही नहीं है कि वह अपने बूढ़े माता–पिता के पास घड़ी दो घड़ी बैठ कर उनके मन को टटोलें। ऐसी स्थिति में वृद्ध विमर्श एक महत्वपूर्ण और प्रसांगिक विमर्श है। इससे न केवल वृद्धों की परेशानियों उनके संघर्षों और अस्त होते जीवन के कई रहस्यों से पर्दा उठ सकता है। विगत 10 वर्षों में वृद्धों पर अनेक कहानियां लिखी गई हैं। इन कहानियों में जहां एक और ढलती आयु की चुनौतियां और शेष जीवन को बिताने के स्थान पर काटने की मनोदशा है तो कहीं अपनों की उपेक्षा से उभरा दर्द। इस अवस्था में अधिकांश लोग किसी न किसी बीमारी से पीड़ित होकर आयु के अंतिम पड़ाव में जीवन के बचे दिन गिन रहे हैं वहीं कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपने परिवार के साथ हंसी खुशी से जीवन व्यतीत कर रहे हैं लेकिन ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम है और समस्या यहीं से शुरू हो जाती है। वृद्धों की समस्या पारिवारिक समस्या अथवा परिवार विघटन जैसे बिंदुओं में सिमट कर रह गई है। (स्त्रोत इंटरनेट) सिमोन कहती है कि, ''वृद्ध आश्रम के जीवन को महिलाएं अधिक सफलता से अपना लेती हैं। महिलाएं आपस में हंस बोल लेती है और साफ–सफाई से लेकर खाना पकाने तक के कामों में अपनी दिनचर्या बिता देती हैं पुरुषों के लिए ऐसे कोई कार्य नहीं होते हैं।''

प्रवासी क्या है? व्यक्तियों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर बसने की क्रिया को प्रवास कहते हैं। जो व्यक्ति अपने मूल स्थान को छोड़कर किसी अन्य स्थान पर रहता है वह प्रवासी कहलाता है। वर्तमान समय में हिंदी साहित्य ने देश की सीमाएं लांग दी हैं, कारण – अकारण जिन लोगों को विदेशों में बसना पड़ा उन लोगों ने अपने देश विदेश के विविध अनुभवों को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति प्रदान की। इन्हीं लोगों द्वारा लिखा गया साहित्य प्रवासी साहित्य कहलाता है। देश–विदेश के बीच एक नई उड़ान भरता प्रवासी साहित्य हर बदलती विचारधारा के परिवर्तित मूल्यों से परिचित करा रहा है। प्रवासी साहित्य अपने विचार निर्भीकता से ,स्पष्टतासे और प्रमाणिकता से व्यक्त करके यथार्थ की परिधि में प्रवेश पता है। प्रवासी साहित्य ने आज विश्व मंच पर अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज करा ली है। प्रवासी साहित्यकारों के मन में एक नई संवेदना, नहीं जीवन दृष्टि, नई चेतना एवं जीवन की नई कसौटी से

एसोसिएट प्रोफेसर–हिंदी विभाग, शम्भुदयाल पी जी कॉलेज गाजियाबाद (उ०प्र०), भारत

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- Sept.-2021

परिपूर्ण साहित्य की सृष्टि का संकल्प है और ऐसा प्रवासी साहित्य एक नया बिंब लेकर आता है। प्रवासी लेखकों ने अपनी रचना शक्ति द्वारा अपनी भाषा और संस्कृति को युग और काल के साथ–साथ कलम बंद किया है। ऐतिहासिक संदर्भ में इन्होंने बदलते परिवेश में भिन्न–भिन्न पहलुओं को रेखांकित किया है। परिपक्व चिंतन द्वारा सामाजिक परिवर्तन की मर्मस्पर्शी समस्याएं और उनके समाधान का साक्षात्कार किया है। साहित्य में जीवन आता है अतः प्रवासी साहित्य में भी प्रवासी जीवन आएगा। जाहिर सी बात है कि विभिन्न देशों में रहने वाले रचनाकारों के साहित्य में एक जैसा जीवन नहीं होगा एवं प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी जीवन की बात करते हैं तो हमें भिन्न–भिन्न तरह का जीवन देखने को मिलता है। प्रवासी हिंदी साहित्य में भारतीय प्रवासी का जीवन आना स्वाभाविक है यह प्रायः सब कहानियों में मिलता है ।

प्रवासी हिंदी कहानियों में वृद्धों की स्थिति – कहानियां जीवन की होती हैं, और जीवन से जोड़ती हैं तथा घट– घट को व्याप्त है। उषा राजे सक्सेना के अनुसार

" यह संसार एक घट है। यहां प्रतिफल कुछ ना कुछ घटता ही रहता है। यह घटनाएं हमारे जीवन को प्रभावित करती हैं। एक कथाकार की संवेदनाएं समय की धड़कन को अपने में समा लेती हैं।"[1]

उषा राजे सक्सेना महज एक कहानीकार नहीं है, साहित्य को उदात ऊंचाइयों तक ले जाने वाली भी शखष्सियत हैं। विगत कुछ वर्षों में हिंदी महिला कथा लेखन न जाने कितनी नई राहों पर निकल पड़ा है, नये सवाल, नये कथ्य, नई भंगिमाओं के साथ आज का स्त्री लेखन जाति, वर्ग, वर्ण और लिंग की सीमाओं से बहुत परे अपनी वैश्विक पहचान और अस्तित्व को खोलता हुआ सामने आया है। वृद्धों की मनोदशाओं, संघर्षों, स्वप्नो, स्मृतियों, आकांक्षा और जुझारूपन को लेकर आता,यहाँ तक कि तीन– तीन पीढ़ियों का वार्तालाप एक अनूठी शैली के साथ प्रवासी हिंदी कहानियों में देखा जा सकता है।

वृद्धों की उपेक्षा– कादंबरी मेहरा की कहानी ' बिन घरनी घर ' में मनोभावों की कई परतें हैं। प्रेम की चरम परिणति, जीवन का वैभव तथा दुखी होने पर भी संतुलित होकर जीना इस कहानी में देखा जा सकता है। कथाकार ने रौन और जेनी के दांपत्य जीवन को बड़ी कुशलता से दर्शाया है। जेनी के प्रति रौन का प्रेम और उस प्रेम की स्तुति के लिए बहुत ही सुनियोजित उत्सव की योजना और उत्सव के पहले ही जैनी की मृत्यु यह सब कथा के मार्मिक प्रसंग हैं।

उस उत्सव का यह दृश्य है– "कोई भी दुखी नहीं लग रहा था, ठीक 9:00 बजे बगीचे में झाड़ियों के नीचे हरी रोशनी जग पड़ी। अजीब खुशनुमा संगीत बजने लगा। एक–एक करके सुंदर से सुंदर आतिशबाजी के अनार बगीचे में यहां–वहां फूटने लगे। बीच–बीच में सितारे झड़ने लगे। सब लोग मंत्रमुग्ध ।आधे घंटे तक तभी आकाश में लाल रंग की बत्तियों का दिल खींच गया और उसके बीच लाल बत्ती शब्द उभरे 'बाय बाय जेनी'। आई लव यू।"[2]

कहानी का अंत काफी पीड़ादायक है पत्नी जैनी की मृत्यु के बाद रौन जब अपने बेटे के घर जेनेवा जाता है तो उसे वहां एक इमारत काफी सुंदर लगती है। वह अपने बेटे से पूछता है कि यह किस वीआईपी का घर है। तो उसका बेटा कहता है– "वह घर आपका ही इंतजार कर रहा है । जानते हैं वहां क्या है? स्वेच्छा से मरने वालों का केंद्र । दुनिया भर के लोग वहां मरने जाते हैं। अपने दुखों से छुटकारा पानेश्रौन बोला।"[3]

वह घर जिसे रौन कभी बेचना नहीं चाहता था उस घर को वह अपने पोते को देना चाहता था लेकिन जब वह अपने बच्चों का अपने प्रति उपेक्षित भाव देखता है तो वह जैनी के घर को बेच देता है और वहीं एक घर खरीद कर रहने लगता है। जिन माता पिता ने अपने बेटे के लिए सब कुछ किया जो भी वे कर सकते थे उससे ज्यादा किया लेकिन उसी बेटे के घर में वृद्ध पिता के लिए कोई जगह नहीं है।

घुटन अथवा कुछ ना बोल सकने की पीड़ा– दिव्या माथुर की कहानी 'ग्रैंड मा' की शुरुआत ही कहानी के मूल भाव घुटन के साथ होती है। वैध्व्य की नियति में मां बच्चों की हां में हां मिलाती तो है परंतु भीतर की घुटन रोज रोज बढ़ती जाती है।

"मेरे कुछ ना बोलने की वजह से बात यहां तक आ पहुंची है कि उन्होंने दीवारों पर लगे महंगे तेल चित्रों के स्थान पर आधुनिक और सस्ते चित्र टांग दिए हैं, क्रिस्टल की क्रोकरी हटा दी और उसकी जगह रसोई में भारी–भरकम रंग–बिरंगे मग, प्लेटें और डोंगे सजा दिए जिन्हें उठाने धरने में मेरे हाथ दुखते हैं। घर ना हो गया आईडिया हो गया ।[4] मैं चुप ही रहती हूं।"[4]

यह कहानी एक वृद्ध महिला की है। जिसके बहू बेटे उसके विचारों को पुराने विचार मानते हैं। जो भी वह कहती है वह उन्हें पुराना ही लगता है। इसलिए वह कुछ बोलती ही नहीं है ताकि घर में शांति बनी रहे।

दिव्या माथुर की कहानी ' पंगा ' बहुत ही प्रसिद्ध कहानी है। कहानी में कैंसर पीड़ित सेवानिवृत्त स्कूल अध्यापिका पन्ना तीन कमरों के अपने मकान और गाड़ी के साथ अकेली रहती है। बेटा –बहू अलग रहते हैं । पति युवा पड़ोसन के साथ खुल्लम –खुल्ला रहने लगा है। मृत्यु भय से ग्रस्त पन्ना विशेषज्ञों के पास जाने के लिए स्वयं ही हाईवे और गलियों से भागती अफ्रीकन गुंडों तथा ट्रैफिक जाम जैसी समस्याओं से जूझ रही है। बेटी के पास अपनी मां का इलाज कराने तक के लिए समय नहीं है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- Sept.-2021

जिस बेटे के लिए सब कुछ किया जो वह कर सकती थी पढ़ाया लिखाया सफल बनाया उसी बेटे के घर में मां के लिए जगह नहीं है।

यह बेटों वाली वृद्धों की कहानियां है। जकिया जुबेरी की ' सांकल' में लाड– दुलार से पला सीमा का 37 वर्षीय बेटा समीर मां द्वारा घर में लाई गई मीरा का विरोध करने पर कैंसर से जूझ चुकी मां की बाजू दरवाजे में दे मारता है, अपना विरूप दिखाता है। अपने ही बेटे से अपनी रक्षा करती हुई माँ कमरे के अंदर से चिटकिनी लगाकर रहती है। बच्चे माता पिता पर हाथ तक उठाते हैं, यह देखकर माता–पिता जीते जी मर जाते हैं और वह मन ही मन भगवान से प्रार्थना करने लगते हैं कि भगवान अब उठा ले, अब नहीं जीना। वृद्ध अवस्था में अपने बच्चों के कारण जीवन से हार जाते हैं।

आर्थिक निर्भरता– वृद्धों को अपने बच्चों पर निर्भर रहना पड़ता है क्योंकि एक उम्र के बाद उनका शरीर कमजोर हो जाता है वह अपने काम से रिटायर हो जाते हैं। अनिल प्रभा कुमार की ' वानप्रस्थ' कहानी में देवकी अपनी तलाकशुदा बेटी श्यामा के पास रह रही है। पति के रिटायरमेंट और तीनों बेटियों की शादी के बाद एक रोज देवकी और डॉक्टर साहब बदहवास से दिल्ली का इतना बड़ा घर, पासबुक, ढेरों एफ.डी. और शेयर वगैरह स्थानीय बेटी प्रिया के हवाले कर श्याम के तलाक की खबर सुन केनेडा पहुंच जाते हैं, और फिर कभी अपने देश वापस नहीं आ पाते। छोटी बेटी प्रिया सभी एफडी शेयरों के कागजात गायब कर देती है।

"अपनी जमी–जमाई गृहस्थी छोड़ कर, इस वन में प्रस्थान तो दोनों ने इकट्ठे ही किया था। फिर यह विश्वासघात कैसा? उसे अधबीच में छोड़ यह कहां जा रहे हैं? इस वन में क्यों वह अकेली ही खड़ी है?"[5]

कनाडा रूपी वन में प्रस्थान ही पति– पत्नी के लिए वानप्रस्थ बन जाता है । वापस अपने देश जाने के लिए ना तो उनके पास पैसे हैं ना वापस जाकर रहने के लिए घर । माता– पिता की सम्पत्ति हड़पने के लिए उनकी हत्या तक कर दी जाती है। जो माता–पिता अपने बच्चों के लिए सब कुछ करते हैं ,शिक्षित करते हैं काबिल बनाते हैं । वही बच्चे सफल होने के बाद माता पिता के संघर्षों को भूल जाते हैं याद रखते हैं तो सिर्फ अपने आप को अपनी सुख–सुविधाओं को।

नीना पाल की 'घर –बेघर' कहानी उस पिता की कहानी है जिसकी पत्नी की जब मृत्यु हुई तब बेटा 3 साल का और बेटी 7 साल की थी, लेकिन बच्चों की खातिर उन्होंने पुनः विवाह किया। आज बाईपास सर्जरी के बाद उस पिता को अस्पताल से छुट्टी मिल रही है।

"क्या बात है जनरल बड़े खुश दिखाई दे रहे हो?"

"खुश होने की तो बात ही है पीटर पूरे तीन हफ्तों के बाद घर जा रहा हूं।" " कौन आ रहा है लेने ? घर जाकर हम सबको भूल तो नहीं जाओगे।"[6]

सुबह से शाम हो गई कोई लेने तक नहीं आया, वह अपने दोस्त पीटर के साथ ओल्ड एज होम चले जाते हैं। ऐसी संतान को सबक सिखाने के लिए घर को बिकने के लिए लगा देते हैं। तब बेटा बहू भागते हुए आते हैं पांव पड़ते हैं। वह मकान के कागज तो लौटा देते हैं लेकिन अपमान की ठेस घर वापस लौटने नहीं देती।

'चौथी ऋतु' वृद्ध जीवन को इंगित करती प्रतीकात्मक कहानी है, जिसमें लेखिका अचला शर्मा ने लिंडा, पीटर, रोजमैरी, लॉरेंस के अकेलेपन और उसे जूझती जीवन शैली को चित्रित किया है। यहां अकेले छूटे रिश्तो का अकेलापन है, बच्चों के मुंह मोड़ लेने पर बचा हुआ पितृत्व है और झुर्रियों वाले चेहरों के पीछे झांकता जीवन है।

"लिंडा देख रही थी। लॉरेंस के चेहरे पर बहुत दिनों से भीतर ही भीतर तकलीफ हो रही है। बोलीं, उम्मीद करनी भी नहीं चाहिए मिस्टर लॉरेंस । हमारा फर्ज है बच्चों को बड़ा करना, उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होने के काबिल बनाना। उन्हें बड़ा होते देख हमें खुशी भी तो होती है ना ।"[7]

अकेलेपन से जूझते वृद्ध– सुधा ओम ढींगरा की कहानी 'खिड़कियों से झांकती आंखें ' अमेरिका में जीवन बिता रहे डॉक्टर और वृद्ध दंपति की कहानी है। इसमें अपनी बेटे को तलाशती आंखों का चित्रण है। एक और डॉक्टर जहां इस देश के किसी शहर में अजनबीपन को महसूस करता है वही वृद्ध दंपति भी एकाकी जीवन जीने को मजबूर हैं।

" जबसे इस शहर में आया हूं कुछ ठीक नहीं लग रहा। अजीब सी घुटन और उदासी वातावरण में महसूस कर रहा हूं।वातावरण में कुछ और भी है, जो मेरी पकड़ में नहीं आ रहा। पिछले साढे तीन साल न्यूयॉर्क में रहा हूं, हाल ही में शहर के हॉस्पिटल में डॉक्टर बन कर आया हूं। पहले तो सोचा शायद बड़े शहर से छोटे शहर में आने के उपरांत ऐसा लग रहा है बात यह भी नहीं है।"[8]

अर्चना पैन्यूली की 'हैप्पी बर्थडे गोल्डन होम' मैं राघवन के माध्यम से उपेक्षित वृद्ध जीवन को दिखाया गया है। राघवन के बेटे अमेरिका में उनका स्वागत टूरिस्ट की हैसियत से तो बढ़–चढ़कर करते हैं और स्वयं राघवन भी वतन लौट कर अपने पुत्रों और अमेरिका की एक्शन सील संस्कृति की दुहाई देते नहीं अघाते पर यह नजारा तब बदला हुआ नजर आता है जब राघवन ग्रीन कार्ड मिल जाने पर अमेरिका जाते हैं।

"इस बार अमेरिका पहुंचने पर उन्हें ना पहले जैसा स्वागत मिला और ना ही पहले जैसा अपनापन। पहली बार जब वे गए थे तो एक टूरिस्ट की हैसियत से गए थे। इस बार उन्हें यहां आकर लगा कि चंद दिनों के लिए टूरिस्ट बनकर कहीं जाना अलग बात है और स्थाई तौर पर वहां रहना

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- Sept.-2021

बिलकुल अलग है।"[9]

कर्नल राघवन खामोश रहकर बगैर किसी प्रतिकार की एक आदर्श वृद्ध की तरह वहां की जीवन शैली देखते समझते और स्वयं को उस में ढालने की कोशिश करते हैं वृद्ध जीवन समझौते का दूसरा नाम है, लेखिकाओं ने अनेक प्रसंगों और घटनाक्रमों के माध्यम से इसे बखूबी समझाया है। कर्नल राघवन जो युद्ध में जुझारू योद्धा थे। आज असहाय जीवन जी रहे थे। कहानी वहां उपेक्षित कर दिए जाने की मानसिकता और ओल्ड एज होम की स्वीकार्यता दोनों को साथ लेकर चलती है।

इला प्रसाद की कहानी है जिसमें एक वृद्धा वाचाल स्त्री को चित्रित किया गया है। लेखिका ने यह बताया है कि एक उम्र के बाद सब ऐसे ही हो जाते हैं।

"वह भी बूढ़ी होने पर क्या इसी तरह ही हर किसी से बोलती रहेंगी। इतना अकेलापन लगेगा कि किसी को जाने बिना, पहली मुलाकात में ही अपनी कहानी सुनाने लगेंगी। भगवान ना करे ऐसा हो या कि शायद वह कुछ ज्यादा ही आत्म केंद्रित है जो इस तरह सोच रही है।"[10]

यह सभी कहानियां वृद्ध जीवन के आत्मसम्मान की कहानियां तो हैं साथ ही साथ जीवन की समस्याओं के साथ–साथ समाधान की ओर भी संकेत करती हैं। कहानियों के कथानक रोचक है मार्मिक है और इनका चरित्र चित्रण सहज है। इन सभी कहानियों का यह संदेश है कि प्रगति करता हुआ समाज यह भूल जाता है कि वृद्धजन समाज की सामूहिक जिम्मेदारी हैं। यह लोग उम्र भर अपने जीवन को अपनी संतति के लिए होम करते हैं और एक निश्चित और आश्वस्त भविष्य के लिए। अपनी जिम्मेदारियों का हंसते–हंसते निर्वहन करते हैं लेकिन वह बच्चे जिसके लिए उन्होंने अपनी उम्र जाया की होती है वह उन्हें वृद्ध आश्रम में धकेल देते हैं। यह कहानियां ना केवल वृद्ध जीवन की सहायता की मांग करती है वरन क्रूर और व असंवेदनशील होते समाज की जीती जागती तस्वीर भी देती हैं। सभी कहानियों में कुछ खास है जो मन को आहत करता है और सोचने को विवश भी । उम्र के आखिरी पड़ाव को हम कैसे सुधार कर जी सकते हैं यह भी संकेत रचनाकारों ने दिया है। इसमें बुजुर्गों की समस्याओं को बड़े संवेदनशील ढंग से उठाया जा रहा है उनकी उपेक्षा, पीड़ा, यातना, तिरस्कार आदि को व्यापक स्थान मिल रहा है और उनके अस्तित्व में अस्मिता की तलाश की कोशिश हो रही है। यह एक आवश्यक और अनिवार्य कार्य है आज इसकी आवश्यकता बहुत है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजे ऊषा (सं.) डॉ. एम. फिरोज खान, वृद्ध जीवन की कहानियां (भारतीय और प्रवासी लेखक, खंड –2) विकास प्रकाशन, कानपुर
2. मेहरा कादम्बरी 'बिन घरनी घर ', प्रकाशक एवं वर्ष उपरोक्त पृष्ठ संख्या 106
3. उपरोक्त पृष्ठ 107
4. माथुर दिव्या "ग्रैंड मा',प्रकाशक एवं वर्ष उपरोक्त, पृष्ठ संख्या–116
5. कुमार अनिल प्रभा, 'वानप्रस्थ' पृष्ठसंख्या125
6. पाल नीना 'घर–बेघर' प्रकाशक एवं वर्ष उपरोक्त,पृष्ठ संख्या–228
7. शर्मा अचला ,'चौथी ऋतु पृष्ठ संख्या158
8. सुधा ओम ढींगरा 'खिड़कियों से झांकती आंखें३' पृ.163
9. अर्चना पैन्यूली 'हैप्पी बर्थडे गोल्डन होम' पृष्ठ संख्या– 203
10. इला प्रसाद 'उस स्त्री का नाम' पृष्ठ संख्या228
11. उपरोक्त सहायक ग्रंथ–
वाङ्मय (त्रिमासिक हिंदी पत्रिका) संपादक: डॉ. एम. फिरोज अहमद
प्रवासी हिंदी साहित्य (विकीपीडिया)

*****